पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज

समकालीन समाज में पारिस्थितिक स्वच्छता एक चिंतनीय विषय है। पर्यावरण और प्रकृति जीवनदायिनी है। आधुनिक काल में पर्यावरण नाश अत्यधिक है। भारत के प्रगति केलिए पर्यावरण एक आभिवाज्य भाग है।

आज यह सवाल प्रसक्त है, भारत के प्रगती के साथ क्या हम हमारा जीवनधायिनी को संभालने का विषय भूल जाता है। पर्यावरण न केवल एक जीवनदायिनी है, बल्की वे हमारा समाज का आधार है। सामाजिक चुनौतियों से एक मुख्य चुनौतियाँ पर्यावरण चुनौतियाँ है। संसार के सारे लोगों के जीवनधायिनी है प्रकृति, लेकिन इस प्रकृति को हम निरंतर क्षयण बनाते है।

प्रकृति के कारण सारे संसार घर की आँगन जैसे लगने लगा है। जिस प्रकार माँ अपने बच्चों को पालन पोषण करते है, उसी प्रकार प्रकृति सारी मानव को पालन पोषन करते है। इसलिए सभी लोगों की जीवन में प्रकृति के स्तान माँ की है। फिर भी पारिस्थतिक चुषण बहुत अधिक है।

अणुबम, विशैली ग्यासें, फाईक्लरी आदी पारिस्थतिक चुषण का कारण है। यह उक्ती प्रसिध है, "परिस्थिति एक सामाज का दर्पण है"। इसका तात्पर्य है, किसी भी देश की सभ्यता और संस्कार को महत्व परिजित होने केलिए हम उस देश की परिस्थिति को देख सकते है। शहरीकरण, भूमण्डलीकरण आदी चुनौतियों के कारण ~~कर्षक और~~ आम जनता की मन में गहरी उदासी है। इसलिए पारिस्थतिक चुषण आर्थीक असमानत, बेरोज़गारी भी प्रभावी करते।

बढ़ती बीमारियों से बचने के लिए कितना ही औषधियाँ है, जो प्रकृति का देना है। हमारा जीवन का आधार वायु है, जो वृक्ष का देना है इसलिए प्रकृति हमें विविध रूप से मदद करते है। लेकिन इंसानों की प्रकृति के प्रति आज प्रकृति विनाशकारी भी है।

विनाशकारी प्रकृती सारे युगों को एक क्षण से संहार करने को सक्षम है। प्रदूषण, जल संकट, जैसे पर्यावरण चुनौतियाँ विनाशकारी प्रकृती का उदाहरण है।

"जैसा बोओगे, वैसा काटोगे" यह उक्ती का अर्थ ~~जैसे~~ हमारा कर्म का फल हमें वैसे मिलता है। इसलिए जैसे ही हमारा ~~वृक्ष~~ प्रवृति, वैसा प्रकृति का व्यवहार है। पारिस्थतिक संरक्षण केलिए आज कितना संघटना है, लेकिन इ-कचरे जैसे नाशीली और बेशबी कचरे सही तरीके से नाश न करना। जिस व्यक्ती प्रकृति को सही और अच्छी तरीके से उपयोग करते है,

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 948 Participant Code: 310

उस व्यक्ती के जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। पारिस्थीतिक संरक्षण न केवल एक व्यक्ती को बल्की पूरे समाज को स्थीरता केलिए मदद करते है। शहर के लोग आमीर हैं और गाँव के लोग गरीबी है। लेकिन प्रकृति के विषम गाँव के लोग आमिर है। पर्यावरण संरक्षण संसार की हर व्यक्ती का कर्तव्य और उतरदायित है।

यह उक्ती भी प्रसिध है "वृक्ष जीवन ~~का~~ वरदान है"। ~~क्योंकी~~ क्योंकी, एक वृक्ष लाखों ~~का~~ पक्षी गण का घर है। ~~इसलिए वृक्ष को स~~

टाक्टर, टिल्लर आदी कृषी के श्रेणी में कान्दी आई। लेकिन इस मशीनों को आविष्कार प्रकृती केलिए एक भीषण है। इसलिए हम मानव लोग प्रकृति को सही तरिके से उपयोग करते है। पारिस्थतिक चूषण समाज के प्रगति केलिए विरुध खडी रहती है।

"पारिस्थतिक संरक्ष द्वारा समाज का प्रगती आज की आवश्यकता है"।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज के संबंध शिथता गहन है। स्वच्छ परिस्थिति बिना समाज कल्पने करना भी कठिन है।

स्वच्छ परिस्थिती हमारा समाज का लक्ष्य है।